बेहतर प्रयास से यमुना को मिलने लगी 'सांस'

संजीव गुप्ता • नई दिल्ली

मृतप्रायः यमुना को जीवन देने के लिए जारी प्रयासों का असर दिखने लगा है। कोरोना काल के बाद पहली बार नदी के जल में रसायन आक्सीजन मांग (सीओडी) व जैविक आक्सीजन मांग (बीओडी) की मात्रा घटी और घुलित आक्सीजन (डीओ) की मात्रा बढ़ी है। यही नहीं, फीकल कोलिफार्म भी पहले से कम हुआ है। यह सुधार भी यमुना की अलग-अलग आठ लोकेशनों पर देखने को मिला है, ऐसे में उम्मीद है कि हालात और बेहतर होंगे।

राष्ट्रीय राजधानी में सरकारें भले बदलती रही हों, लेकिन यमुना की हालत नहीं सुधरी। करोड़ों रुपये यमुना की 'गाद' में बह गए। लेकिन, कोरोना काल में देशव्यापी लाकडाउन के दौरान मानो मृत यमुना को सांसें मिल गईं। पानी साफ होने लगा और प्रदूषक तत्वों में भी कमी दर्ज की गई। लेकिन, तीन माह के बाद जब सभी गतिविधियां दोबारा चालू हुईं तो यह सुधार फिर बदहाली में बदल गया। माह-दर-माह सीओडी-बीओडी की मात्रा बढ़ती व डीओ की मात्रा घटती गई। फीकल कोलिफार्म बढ़ता रहा। डीओ का स्तर घटने से मछलियां भी मरने लगीं। यानी, इसका पानी पीने व नहाने के लायक तो पहले से नहीं था, जीव-जंतुओं के लिए भी काल बन गया।

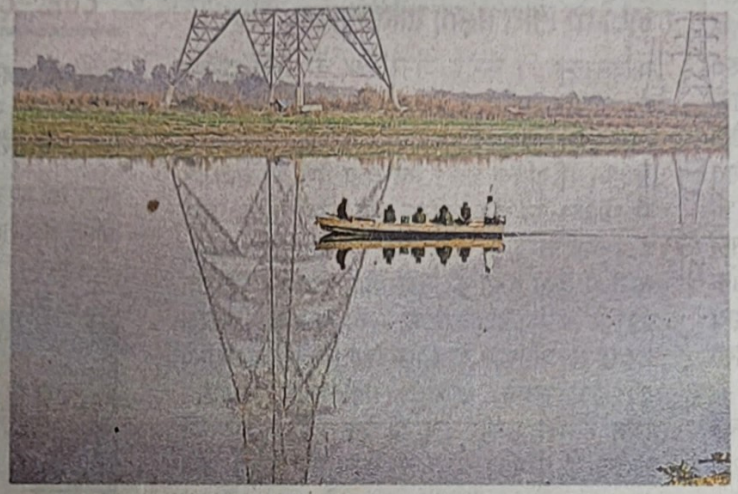

बेहतरी की उम्मीद... यमुना नदी के पानी में सुधार दिखा, कश्मीरी गेट के समीप बोट से नदी की निगरानी करते बाढ़ व सिंचाई विभाग की टीम के सदस्य • चंद्र प्रकाश मिश्र

पांच माह के समेकित प्रयास दिखाने लगे हैं असर

लेकिन पिछले पांच माह से यमुना के जीर्णोद्धार के लिए जो प्रयास हो रहे हैं, उसका नतीजा अब सामने आने लगा है। जून 2020 में लाकडाउन के दौरान यमुना की विभिन्न नौ लोकेशनों पर सीओडी की मात्रा 10 से 110 एवं बीओडी की मात्रा 2.8 से 30 मिलीग्राम प्रति लीटर तक थी। जबकि मई 2023 में आठ लोकेशनों पर यह क्रमशः 24 से 186 व 2.0 से 48 तक रही है। इसी तरह डीओ की मात्रा तब 1.3 से 9.0 मिलीग्राम प्रति लीटर तक थी। जबकि मई 2023 में आठ लोकेशनों पर यह 0.3 से 8.4 तक रही है।

स्थिति में सुधार के प्रमुख कारण

- एनजीटी ने अपने हाथ में ली जिम्मेदारी और जनवरी 2023 में एलजी के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय समिति बनाई।
- अब इसकी रिपोर्ट एनजीटी और सीएक्यूएम तो ले ही रहे हैं, साथ ही हर पखवाड़े एलजी यमुना की साफ सफाई पर समीक्षा बैठक कर रहे हैं।
- नालों से प्लास्टिक कचरा और गंदगी मशीनों से निकाली जा रही है और दोबारा न डले इसके लिए प्रादेशिक सेना की एक पूरी बटालियन यमुना के किनारे तैनात कर दी गई है।
- जो नाले नदी में गिरते थे, उनके मुहानों पर जाली लगा दी गई है, ताकि कचरा नदी में न जाए।
- जल बोर्ड के पुराने एसटीपी की क्षमता बढ़ाई गई है और नए एसटीपी बनाने का काम तेजी से चल रहा है।
- पिछले माह में अनधिकृत क्षेत्रों में चल रही सौ से अधिक डाइंग यूनिट बंद की गई हैं, पहले इन्हें नोटिस दिया जाता था, अब सीधे सील किया जा रहा है और साथ ही बिजली-पानी का कनेक्शन काटा जा रहा है।

जून 2020 में विभिन्न जगहों पर यमुना के पानी में मौजूद प्रदूषकों की स्थिति

जगह	सीओडी	बीओडी	डीओ	फीकल कोलिफार्म
पल्ला	10	2.8	9.0	2100
वजीराबाद	18	4.0	7.3	2600
आइएसबीटी पुल	82	32	00	50,00000
आइटीओ पुल	76	28	2.0	50,00000
निजामुद्दीन पुल	68	22	1.6	33,00000
ओखला बैराज	78	28	1.3	70,00000
आगरा कैनाल	98	32	00	3,3,0000
जैतपुर	88	30	00	60,00000

दिसंबर 2022 में विभिन्न जगहों पर यमुना के पानी में मौजूद प्रदूषकों की स्थिति

जगह	सीओडी	बीओडी	डीओ	फीकल कोलिफार्म
पल्ला	32	2	9.1	1100
वजीराबाद	64	8	5.4	17,000
आइएसबीटी पुल	192	50	00	2,10,000
आइटीओ पुल	186	52	0.7	2,00,000
निजामुद्दीन पुल	224	56	00	38,000
ओखला बैराज	256	44	00	5,80,000
आगरा कैनाल	208	60	00	4,10,000
असगरपुर	304	70	00	6,80,000

मई 2023 में विभिन्न जगहों पर यमुना नदी के पानी में मौजूद प्रदूषकों की स्थिति

जगह	सीओडी	बीओडी	डीओ	फीकल कोलिफार्म
पल्ला	24	2.0	8.4	400
वजीराबाद	48	8.0	5.3	800
आइएसबीटी पुल	136	38	00	20,000
आइटीओ पुल	104	30	0.7	12,000
निजामुद्दीन पुल	144	40	0.3	24,000
ओखला बैराज	160	42	00	2,20,000
आगरा कैनाल	176	44	00	3,10,000
असगरपुर	186	48	00	40,000

मानकः बीओडी तीन मिलीग्राम प्रति लीटर, डीओ पांच मिलीग्राम प्रति लीटर, कोलिफार्म प्रति 100 मिलीलीटर 500 से 2500 तक

nwda.gov.in